एम.ए. हिंदी (एम.एच.डी.)
पाठ्यक्रम कोड : एम. एच. डी.–04
नाटक एवं अन्य गद्य विधाएँ

सत्रीय कार्य
(जुलाई 2025 और जनवरी 2026 सत्रों के लिए)

पाठ्यक्रम कोड : एम.एच.डी.–04
नाटक एवं अन्य गद्य विधाएँ

जुलाई–2025 सत्र के लिए अंतिम तिथि : 31 मार्च, 2026
जनवरी–2026 सत्र के लिए अंतिम तिथि: 30 सितम्बर, 2026

मानविकी विद्यापीठ
इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
मैदानगढ़ी, नई दिल्ली-110068

सत्रीय कार्य 2025–2026

पाठ्यक्रम कोड एम.एच.डी. 04/2025–2026

प्रिय छात्र/छात्राओ !

नाटक एवं अन्य गद्य विधाएँ पाठ्यक्रम में आपको एक सत्रीय कार्य करना है। यह सत्रीय कार्य शिक्षक जाँच सत्रीय कार्य है। सत्रीय कार्य के लिए 100 अंक निर्धारित किए गए हैं। उददेश्य सत्रीय कार्य का मुख्य उद्देश्य यह जाँचना है कि आपने पाठ्य सामग्री को कितना समझा है और आप स्वयं उसे अपने शब्दों में कैसे प्रस्तुत कर सकते हैं। उद्देश्य यह भी है कि अध्ययन के दौरान जो कुछ आपने सीखा और समझा है उसे आलोचनात्मक ढंग से प्रस्तुत कर सकें ।

निर्देश : सत्रीय कार्य आरंभ करने से पूर्व निम्नलिखित बातों को ध्यान से पढ़िए :

1. ऐच्छिक पाठ्यक्रम के लिए कार्यक्रम दर्शिका में दिए गए विस्तृत निर्देशों का सावधानीपूर्वक अध्ययन कीजिए।

2. अपनी उत्तर पुस्तिकाओं के पहले पृष्ठ के दाएँ सिरे पर अनुक्रमांक, नाम, पूरा पता और दिनांक लिखिए।

3. अपनी उत्तर पुस्तिकाओं के प्रथम पृष्ठ के मध्य भाग में पाठ्यक्रम का शीर्षक सत्रीय कार्य संख्या और अपने अध्ययन केन्द्र का उल्लेख कीजिए।

4. उत्तर पुस्तिका का प्रथम पृष्ठ निम्न प्रकार से शुरू होगा :

अनुक्रमांक : .....

नाम : .....

पता : .....

पाठ्यक्रम का नाम/कोड : .....

सत्रीय कार्य कोड : .....

अध्ययन केन्द्र का नाम /कोड : .....

दिनांक : .....

5. उत्तर के लिए केवल फुलस्केप के आकार के कागज का इस्तेमाल करें और उन कागजों को अच्छी तरह से बाँध लें।

6. प्रत्येक उत्तर के पहले प्रश्न संख्या अवश्य लिखें और **अपनी ही लिखावट में उत्तर दें**।

7. सत्रीय कार्य पूरा करके जाँच के लिए अपने अध्ययन केन्द्र के संयोजक (Coordinator) के पास निर्धारित तिथि तक अवश्य जमा करा दें।

सत्रीय कार्य जमा करने की अंतिम तिथि :

जुलाई–2025 सत्र के लिए अंतिम तिथि : 31 मार्च, 2026

जनवरी–2026 सत्र के लिए अंतिम तिथि : 30 सितम्बर, 2026

सत्रीय कार्य के लिए आवश्यक निर्देश :

सत्रीय कार्य में आपसे मुख्य रूप से तीन तरह के प्रश्न पूछे गए हैं।

उत्तर देने के लिए आप निम्नलिखित विधि से तैयारी करेंगे तो आपके लिए लाभप्रद होगा :

1. अध्ययन : सबसे पहले सत्रीय कार्य को ध्यान से पढ़िए। फिर इससे संबंधित इकाइयों का अध्ययन कीजिए। अंत में प्रत्येक प्रश्न के संबंध में सभी खास बातें नोट कर लीजिए और उन्हें तार्किक ढंग से पुनर्व्यवस्थित कीजिए।

2. अभ्यास : अपने उत्तर का प्रारूप लिखने से पूर्व नोट की गई बातों पर विचार कीजिए। निबंधात्मक या टिप्पणीपरक प्रश्नों में आरंभ और उपसंहार का विशेष ध्यान दीजिए। उत्तर के आरंभिक अंश में प्रश्न की संक्षिप्त व्याख्या और अपने उत्तर की दिशा का संकेत अवश्य दे देना चाहिए। मध्य भाग में आप उत्तर का मुख्य भाग आवश्यक विस्तार के साथ कमबद्ध और तार्किक ढंग से प्रस्तुत करें। उपसंहार में उत्तर का सार देना चाहिए। एक प्रश्न में आपको कहानियों से लिए गए कुछ गद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या करनी है। इसके लिए गद्यांश को ध्यान से पढ़ें और संदर्भ सहित व्याख्या करें।

यह सुनिश्चित कर लीजिए कि :

क) आपका उत्तर तार्किक और सुसंगत हो,

ख) वाक्यों और अनुच्छेदों (Paragraphs) के बीच स्पष्ट क्रमबद्धता हो,

ग) उत्तर सही ढंग से लिखा गया हो तथा जो आपकी अभिव्यक्ति, शैली और प्रस्तुति के पूर्णतया अनुकूल हो।

घ) उत्तर प्रश्न में निर्धारित शब्दों से अधिक लंबा न हो, और

ङ) आपके लेखन में भाषागत त्रुटियाँ न हों, विशेष रूप से मात्रा और व्याकरण संबंधी गलतियों से बचें।

1. प्रस्तुति : जब आप अपने उत्तर से पूर्णतया संतुष्ट हो जाएँ तो उसको साफ और सुंदर अक्षरों में उत्तर पुस्तिका में लिख लीजिए तथा जिन बातों पर आप जोर देना चाहते हैं उन्हें रेखांकित कर दीजिए।

2. विशेष : अपने उत्तर की फोटो प्रति/कार्बन प्रति अपने पास अवश्य रखें।

शुभकामनाओं सहित!

नोट : याद रखें कि विश्वविद्यालय के नए नियमानुसार परीक्षा में बैठने से पूर्व सत्रीय कार्य जमा कराना अनिवार्य हैं अन्यथा आपको परीक्षा में बैठने की अनुमति नहीं दी जाएगी।

सत्रीय कार्य (2025–2026)
एन.एच.डी.–04
नाटक एवं अन्य गद्य विधाएँ

पाठ्यक्रम कोड एम.एच.डी. 04/2025–2026
सत्रीय कार्य कोड एम.एच.डी.04/टी.एम.ए./2025–26
अंक : 100

खंड–1

1. निम्नलिखित अवतरणों की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए। $4x10 = 40$

(क). युद्ध क्या गान है? रूद्र का शृंगीनाद्, भैरवी का तांडव नृत्य और शस्त्रों का वाद्य मिलकर एक भैरव–संगीत की सृष्टि होती है। जीवन के अंतिम दृश्य को जानते हुए, अपनी आंखों से देखना, जीवन–रहस्य के चरम सौंदर्य की नग्न और भयानक वास्तविकता का अनुभव–केवल सच्चे वीर–हृदय को होता है, ध्वंसमयी महामाया प्रकृति का वह निरंतर संगीत है। उसे सुनने के लिए हृदय में साहस और बल एकत्र करो। अत्याचार के श्मशान में ही मंगल का–शिव का सत्य सुंदर संगीत का समारंभ होता है।

(ख). मैं दो बड़े पहियों के बीच लगा हुआ

एक छोटा निरर्थक शोभा–चक्र हूँ

जो बड़े पहियों के साथ घूमता है

पर रथ को आगे नहीं बढ़ाता

और न धरती ही छू पाता है!

और जिसके जीवन का सबसे बड़ा दुर्भाग्य यह है

कि वह धुरी से उतर भी नहीं सकता!

(ग). धर्म, नीति, मर्यादा, यह सब हैं केवल आडम्बर मात्र,

मैंने यह बार–बार देखा था।

निर्णय के क्षण में विवेक और मर्यादा

व्यर्थ सिद्ध होते आये हैं सदा

हम सब के मन में कहीं एक अंध गह्वर है।

बर्बर पशु, अंधा पशु वास वहीं करता है,

स्वामी जी हमारे विवेक का,

नैतिकता, मर्यादा, अनासक्ति, कृष्णार्पण

यह सब है अंधी प्रवृत्तियों की पोशाकें

जिनमें कटे कपड़ों की आँखें सिली रहती हैं

मुझको इस झूठे आडम्बर से नफरत थी

इसलिए स्वेच्छा से मैंने इन आँखों पर पट्टी चढ़ा रखी थी।

(घ). साँच कहैं ते पनही खावैं।

झूठे बहु विधि पदबी पावैं।

छलियन के एका के आगे।

लाख कहौ एकहु नहिं लागे।।

भीतर होइ मलिन की कारो।

चाहिए बाहर रंग चटकारो।।

धर्म अधर्म एक दरसाईं।

राजा करे सो न्याव सदाई।।

भीतर स्वाहा बाहर सादे।

राज करहि अगले अरू प्यादे।।

अंधाधुंध मच्यौ सब देसा।

मानहुँ राजा रहत विदेसा।।

गो द्विज श्रुति आदर नहिं होई।

मानहुँ नृपति विधर्मी कोई।।

2. भारतेंदु ने 'अंधेर नगरी' के माध्यम से तत्कालीन राज व्यवस्था के प्रति किस तरह का दृष्टिकोण व्यक्त किया है ? 10

3. 'स्कंदगुप्त' चरित्र प्रधान नाटक है। इस कथन के संदर्भ में स्कंदगुप्त की चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिए। 10

4. हिंदी नाटक परंपरा में 'आधे–अधूरे' का स्थान निर्धारित कीजिए। 10

5. ललित निबंध की दृष्टि से कुटज की विशेषताओं क विवेचन कीजिए। 10

6. निम्नलिखित विषयों पर टिप्पणी लिखिए। 4x5= 20

(क) 'लोभ और प्रीति' का प्रतिपाद्य

(ख) 'अंधायुग' : मिथकीय चेतना

(ग) 'ठुकरी बाम' की चारित्रिक विशेषता

(घ) कलम का सिपाही : शिल्पगत वैशिष्ट्य